1

सलाम

कुलुस्सियों 1:1, 2

पौलुस और तीमुथियुस की ओर से (1:1)

[1]पौलुस की ओर से, जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, और भाई तीमुथियुस की ओर से।

''पौलुस, ...'' (1:1)

पौलुस ने कुलुस्सियों के नाम अपने पत्र की पहचान प्रेरिताई के अधिकार के साथ लेखक के रूप में करवाई। उसने तीमुथियुस को अपना सहकर्मी और मसीह में भाई बताया। इसके बाद वह मसीह में अपने कुलुस्सी भाइयों को सम्बोधित करने और परमेश्वर की ओर से उनके लिए इच्छा करने के लिए आगे बढ़ा पौलुस के तेरह पत्रों का आरम्भ उसके नाम के साथ होता है।

इस पत्र का आरम्भ ''पौलुस'' के साथ करके उसने अपने समय में पाए जाने वाले सलाम का ढंग अपनाया। आम तौर पर वह अपने नाम और कई बार अपने साथ के व्यक्ति या व्यक्तियों के नाम के साथ प्राप्तकर्त्ताओं का हवाला देते हुए सलाम लिखता था।

प्रेरितों के काम की पुस्तक इस प्रेरित को ''शाऊल'' और ''पौलुस'' दो नामों से दिखाती है (प्रेरितों 13:9)। जब वह यहूदियों में था तब स्पष्टतया उसे उसके इब्रानी नाम ''शाऊल'' से जाना जाता था (*sha' ul,* का अर्थ है ''परमेश्वर से मांगा गया'')। इसका यूनानी सामानांतर शब्द *Saluos* है। पौलुस जब अन्यजाति संसार में प्रचार करने लगा तो लूका उसके यूनानी नाम *Paulos* या पौलुस का इस्तेमाल करने लगा, जिसका अर्थ है ''नन्हा'' या ''छोटा।'' अपने पत्रों में उसने अपने आपको ''पौलुस'' बताया (उदाहरण के लिए रोमियों 1:1; 1 कुरिन्थियों 1:1)। 2 पतरस 3:15 में पतरस ने उसे ''पौलुस'' कहा जो कि प्रेरितों के काम और पौलुस के पत्रों के बाहर नये नियम में उसके नाम का एकमात्र उल्लेख है।

दमिश्क के मार्ग पर अपने अनुभव को याद करते हुए (प्रेरितों 22:7; 26:14), पौलुस ने यीशु द्वारा उसे ''शाऊल, शाऊल ...'' कहने को दोहराया। अन्य मामलों में उसने अपने आपको ''पौलुस'' कहा। अपने पत्रों में उसने ''शाऊल'' का इस्तेमाल कभी नहीं किया, शायद इसलिए क्योंकि वे अन्यजाति संसार को लिखे गए थे या तीमुथियुस, तीतुस और फिलेमोन जैसे लोगों की अन्यजाति पृष्ठभूमि के कारण।

कुछ लोगों का दावा है कि मसीही बनने पर उसका नाम ''शाऊल'' से ''पौलुस'' रखा गया था। शायद यह सही नहीं है। लूका उसके मन परिवर्तन से बारह सालों तक उसे ''शाऊल'' ही कहता रहा है (प्रेरितों 7:58; 8:1-3; 9:1-22; 11:25-30; 13:1, 2)। ''पौलुस'' के रूप में

उसके नाम का पहली बार उल्लेख उसकी पहली मिशनरी यात्रा के समय साइप्रस नामक टापू पर पआफुस में इलीमास का सामना करने के विवरण में मिलता है। लूका ने लिखा है, ''तब शाऊल ने जिस का नाम पौलुस भी है'' (प्रेरितों 13:9)। लूका ने यह नहीं लिखा कि उसका नाम ''शाऊल'' से बदलकर ''पौलुस'' रख दिया गया था। ''प्रेरित को सम्भवतया शैश्वकाल से ही *शाऊल* (*Saoul, Saulos*) और *पौलुस* दोनों नाम मिले थे।''[1] इब्रानी नाम और यूनानी नाम दोनों इकट्ठे होना कोई असामान्य बात नहीं होगी।

न केवल प्रेरितों के काम (अध्याय 13—28) बल्कि उसके पत्रों से भी, किसी भी अन्य प्रेरित से अधिक पौलुस के बारे में पता चलता है। दमिश्क में अपने मन परिवर्तन के बाद वह तुरन्त दमिश्क में और फिर यरूशलेम में प्रचार करने लगा (प्रेरितों 9:19-22, 26-28)। यहूदियों द्वारा उसे जान से मारने की धमकी के कारण उसे तरसुस में भेज दिया गया था (प्रेरितों 9:29, 30)। बरनबास द्वारा उसे तरसुस से अन्ताकिया में लाए जाने तक वह गुमनाम ही रहा (प्रेरितों 11:22-26; देखें गलातियों 1:22)। इसके बाद उसने तीन मिशनरी यात्राएं कीं (प्रेरितों 13:1—21:15)।

अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के अन्त में पौलुस को यरूशलेम में पहचान लिया गया। यहूदी उसे मार डालने की तलाश में थे, परन्तु रोमी सेनापति ने उसे बचा लिया (प्रेरितों 21:26-39)। वहां से उसे कैसरिया में भेज दिया गया और फेलिक्स द्वारा, फिर फेस्तुस और अग्रिप्पा द्वारा मुकदमा चलाया गया (प्रेरितों 23—27)। रोमी नागरिक होने के कारण उसने रोम में कैसर द्वारा मुकदमा चलाए जाने की अपील की, जहां वह दो साल तक भाड़े के घर में रहा और सुसमाचार सुनाता रहा (प्रेरितों 28:30)।

उसके जीवन की बाद की घटनाएं तीमुथियुस और तीतुस के नाम उसके पत्रों और बाइबल से बाहर की परम्परा से पता चल सकती हैं:

> बहुत सम्भावना है कि पौलुस को ईस्वी 63 में छोड़ दिया गया और अपनी फिर से गिरफ्तारी और नीरो के हाथों मृत्यु से पहले वह स्पेन और एजियन क्षेत्र में गया (लगभग 67 ईस्वी में)। *1 क्लेमेंट* (5.5-7; ई. 95), म्युरेटोरियम कैनन (लगभग 170), और अपोक्रिफा (वरसिल्ली) *ऐक्टस ऑफ़ पीटर* (1.3; लगभग 200), स्पेन की एक यात्रा की गवाही देते हैं; और पासबानी की पत्रियां पूर्व में प्रेरितों के काम के बाद की सेवकाई को शामिल करती हुई लगती है।[2]

मुकदमा होने और छोड़े जाने के बाद शायद वह स्पेन में मिशन कार्य करने के लिए जाते हुए (रोमियों 15:24), मकिदुनिया में जाते हुए (1 तीमुथियुस 1:3), तीमुथियुस को इफिसुस में छोड़ गया। इस यात्रा में वह क्रेते से होकर गया, जहां वह वहां पर काम को पूरा करने के लिए तीतुस को छोड़ गया (तीतुस 1:5)। फिर उसने जाड़े में निकुपुलिस में जाने की योजना बनाई (तीतुस 3:12)।[3] स्पेन से वापस आने पर वह फिर से रोम में बंदी बना लिया गया होगा (2 तीमुथियुस 1:16, 17; 2:9)।[4] अपने दूसरे मुकदमे में अपनी पहली पेशी के बाद उसे दोषी न पाए जाने के बावजूद गिरफ्तार कर लिया गया होगा (2 तीमुथियुस 4:16-18)। परन्तु उसे छूट जाने की कोई उम्मीद नहीं थी; उसे अपना अन्त निकट लग रहा था (2 तीमुथियुस 4:6-8)।

परम्परा के अनुसार पौलुस का रोम के प्राचीन नगर के निकट एक ओस्टियन मार्ग पर सिर धड़ से अलग कर दिया गया। यदि रोमी नागरिक के रूप में उसे मृत्युदण्ड दिया जाता तो उसे क्रूस पर नहीं चढ़ाया जाना था, जैसे परम्परा बताती है कि पतरस को न केवल मारा गया था, बल्कि तलवार से उसका सिर धड़ से अलग किया गया होगा।

उसके तेरह पत्रों के प्रभाव को नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता। इन्हें न केवल आरम्भिक कलीसिया द्वारा पढ़ा जाता था बल्कि बाद की सब पीढ़ियों द्वारा भी उनका विश्लेषण और अध्ययन किया गया है। इन पत्रों में कुछ मसीही विचार और शिक्षा का आधार मिलता है। शायद जेल की उसकी पत्रियों ने उसकी मिशनरी यात्राओं से अधिक मसीहियत को प्रभावित किया है।

''... प्रेरित है'' (1:1)

प्रेरित है वाक्यांश को जोड़ने से तीन उद्देश्य पूरे होते हैं: पहचान, क्योंकि पौलुस एक आम नाम था; प्रेरित के रूप में उसके अधिकार की पुष्टि; और निजी सम्बन्ध क्योंकि कुलुस्से के लोग उसके बारे में जानते थे। पत्र के किसी प्रेरित की ओर से होने का अर्थ था कि इसमें यीशु के अधिकार अन्य पवित्र शास्त्रों के अधिकार की तरह ही (2 पतरस 3:15ख, 16)। यीशु का अधिकार था (1 कुरिन्थियों 14:37)। कुलुस्सियों का एक-एक शब्द परमेश्वर का प्रकाशन है। पौलुस को उसकी ओर से जिसने उसे भेजा था अधिकार और सामर्थ दी गई थी। वह केवल अपने व्यक्तिगत विचार व्यक्त नहीं कर रहा था; बल्कि वह अधिकारात्मक ढंग से, परमेश्वर की प्रेरणा से, यीशु के उस संदेश को लिख रहा था, जो सीधे प्रकाशन के द्वारा उसे दिया गया था (1 कुरिन्थियों 14:37; गलातियों 1:11, 12)। कुलुस्सियों के लिए इस पत्र को इस प्रकार स्वीकार करना आवश्यक था जैसे यह उनके लिए मसीह का संदेश हो।

इस पत्र में पौलुस ने अपने आपको प्रेरित कहा, परन्तु अपने सब पत्रों में उसने प्रेरित होने की बात नहीं की।

> ... उन कलीसियाओं को लिखते हुए, जहां उसके अधिकार का दावा करना आवश्यक था, पौलुस प्रेरिताई के अपने कमीशन का दावा करता है, परन्तु फिलिप्पियों और थिस्सलुनीकियों के नाम अपने पत्र में, जो स्पष्टतया उसके मित्र और भरोसे योग्य थे, वह इसका उल्लेख नहीं करता है। इसी प्रकार से फिलेमोन के नाम व्यक्तिगत पत्र में जहां वह सहायता मांग रहा है, अपने पद का इस्तेमाल नहीं करता। इसके विपरीत गलातिया की कलीसियाओं के नाम पत्र में जहां उसके अधिकार को चुनौती दी गई थी, प्रेरिताई की अपनी स्थिति का उसने बहुत मज़बूत दावा किया है।[5]

गलातियों के नाम पत्र में (गलातियों 1:1) पौलुस ने अपनी प्रेरिताई के मनुष्यों की ओर से नहीं, बल्कि परमेश्वर द्वारा दिए जाने का दावा किया। लगता है कि पौलुस ने कुरिन्थियों के नाम पत्र में अपनी प्रेरिताई का बचाव इसलिए किया, क्योंकि उन्होंने उसके प्रेरित होने पर सवाल उठाया था (1 कुरिन्थियों 9:1, 2; 15:9, 10; 2 कुरिन्थियों 11:5; 12:11, 12)। चाहे वह उन बारह में से एक नहीं, परन्तु वह अन्य प्रेरितों के बराबर का था और उसे बराबर अधिकार था।

''*apostle*'' (प्रेरित) यूनानी शब्द *apostolos* (मूलतया, ''भेजा गया'') का लिप्यंतरण

है। नये नियम में इसका अर्थ भेजने वाले के नाम में, उसकी ओर से, और उसके अधिकार से काम करने के लिए दूत के रूप में हो गया। यीशु मसीह के प्रेरित उसकी आज्ञाएं सिखाने के लिए उसके द्वारा भेजे गए लोगों के रूप में अपना नहीं, बल्कि उसका प्रतिनिधित्व करते थे (मत्ती 28:20)।

सामान्यतया ''प्रेरित'' शब्द का इस्तेमाल अपने बहुत से चेलों में से यीशु द्वारा चुने गए छोटे समूह अर्थात उन बारह चेलों द्वारा किया जाता है (लूका 6:13)। इन लोगों को उसने अपने विशेष प्रतिनिधि बनाकर भेजा था। अपने अधिकार के आधार पर यीशु ने दूसरों के पास उसका प्रतिनिधत्व करते हुए अपना काम बढ़ाने के लिए उन्हें भेजा (मत्ती 10:1-5; 28:18-20)। जिन्होंने उन्हें ग्रहण किया, उन्होंने यीशु को ग्रहण किया (मत्ती 10:40)।

यहूदा द्वारा यीशु से विश्वासघात करने और स्वयं मर जाने के बाद उसके स्थान पर मत्तियाह को चुना गया, जिससे वह उन बारह में से एक बन गया (प्रेरितों 1:16-26)। पौलुस जो अन्यजातियों का प्रेरित है (रोमियों 11:13)। उन बारह में से एक नहीं था। उसे बाद में ''अधूरे दिनों का जन्मा ...'' (1 कुरिन्थियों 15:8)।

पौलुस बेशक उन बारह में से नहीं था, परन्तु यीशु के प्रतिनिधि के रूप में उसके पास भी वही अधिकार था। नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं के साथ प्रेरित कलीसिया की नींव थे (इफिसियों 2:20)। उन्हें पवित्र आत्मा की सहायता के द्वारा यीशु मसीह से प्रकाशन मिला था (यूहन्ना 14:26; 16:13; इफिसियों 3:5), इस कारण उन्हें यीशु की शिक्षा के सम्बन्ध में अन्तिम वचन पाने वालों के रूप में स्वीकार किया जाना आवश्यक था (2 पतरस 3:2)। आरम्भिक कलीसिया ''प्रेरितों की शिक्षा'' में बनी रही (प्रेरितों 2:42) क्योंकि यह उनके अधिकार का सम्मान करती थीं।

''प्रेरित'' शब्द उन के लिए भी प्रासंगिक हो सकता है जिनके पास यीशु मसीह के बारह प्रेरितों का पद नहीं था। किसी भी दूत को जैसे बरनबास, जिसे अन्ताकिया से भेजा गया था, जिसे भी भेजा गया था (प्रेरितों 13:2-4) ''प्रेरित'' कहा जा सकता था (प्रेरितों 14:4, 14; देखें 2 कुरिन्थियों 8:23; फिलिप्पियों 2:25)। बरनबास अन्ताकिया की कलीसिया का प्रेरित था, परन्तु उन विशेष बारह प्रेरितों में से एक नहीं था। यह स्पष्ट है क्योंकि यरूशलेम में उसे उन से अलग पहचाना जाता था (प्रेरितों 9:27)।

जब पौलुस मसीही लोगों को सताने के लिए दमिश्क को जा रहा था, तो यीशु ने उसे दर्शन दिया। उसने इस दर्शन देने का कारण बताया: ''मैंने तुझे इसलिए दर्शन दिए हैं कि तुझे उन बातों का भी सेवक और गवाह ठहराऊं, जो तू ने देखी हैं, और उनका भी, जिनके लिए मैं दर्शन दूंगा'' (प्रेरितों 26:16)। इस दर्शन से यीशु का प्रेरित होने की एक पूर्व शर्त पूरी हुई (1 कुरिन्थियों 9:1, 2; 15:8) कि उसने जी उठे प्रभु को देखा है (प्रेरितों 1:21, 22; 2:32; 10:40, 41)। पौलुस ने यीशु द्वारा स्वयं चुना जाने और मनुष्य की ओर से नहीं बल्कि परमेश्वर द्वारा इस पद पर ठहराने की अन्य शर्तों को पूरा कर दिया (2 कुरिन्थियों 1:1; गलातियों 1:1; इफिसियों 1:1; 2 तीमुथियुस 1:1)।

पौलुस की प्रेरिताई की पुष्टि उसके द्वारा दिखाए गए चिह्नों, अचम्भों और आश्चर्य के कामों के द्वारा हुई थी (2 कुरिन्थियों 12:12; रोमियों 15:18, 19 भी देखें)। यह तथ्य कि कुरिन्थुस

की कलीसिया को आश्चर्यकर्म करने के दान मिले थे इस बात का प्रमाण था कि वह प्रेरित है (1 कुरिन्थियों 12:8-11)। कुरिन्थुस की कलीसिया में पाए जाने वाले अन्य दानों की तरह आत्मा के दान प्रेरितों के हाथ रखने से दिए गए थे (प्रेरितों 8:17, 18; 19:6)।

दमिश्क के मार्ग पर पौलुस को दर्शन देने के समय यीशु ने उससे कहा था कि नगर में जाए जहां उसे बताया जाएगा कि उसे क्या करना है (प्रेरितों 9:6)। यीशु द्वारा भेजे गए हनन्याह ने पौलुस से कहा, ''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)। पौलुस के पाप तब तक नहीं धोए गए थे जब तक उसने बपतिस्मा नहीं लिया था। इसके बाद उसने अन्य प्रेरितों में से किसी से भी बढ़कर परिश्रम किया (1 कुरिन्थियों 15:10)।

''मसीह यीशु का'' (1:1)

पौलुस ने लिखा कि वह **मसीह यीशु का** प्रेरित है। ''यीशु'' यूनानी भाषा के *Iēsous* नाम से लिया गया था, यह इब्रानी भाषा के *Y^{e}hoshua´* के समान है। Yeh और *oshua* के इस मेल का जिसे पुराने नियम में ''यहोशू'' (निर्गमन 17:9) अनुवाद किया गया है, का अर्थ है ''परमेश्वर उद्धार है'' या ''परमेश्वर उद्धार कर्त्ता है।'' yeh या yah परमेश्वर के नाम ''याहवेह'' जिसे इस्राएलियों द्वारा जाना जाता था का एक लघु रूप है। इब्रानी शब्द yasha´ का अर्थ है ''बचाता है।'' स्वर्गदूत ने यीशु के सम्बन्ध में यूसुफ़ को बताया था, ''उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा'' (मत्ती 1:21) उसे ''यीशु'' या ''परमेश्वर उद्धारकर्त्ता है'' सही ही कहा गया है। प्रेरितों 4:12 पतरस ने कहा, ''और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।''

''ख्रिस्तुस'' (*Christos*) की तरह ''मसीह'' (mashiach, ''मसीहा'') है जिसका अर्थ है ''अभिषिक्त।'' ''ख्रिस्तुस'' और ''मसीहा'' उपाधियां हैं न कि नाम। पुराने नियम में लोगों को याजक (निर्गमन 28:41) राजा (1 शमूएल 15:1) और भविष्यद्वक्ता के रूप में (1 राजाओं 19:16) अभिषेक किया जाता था। यीशु के पास ये तीनों पद हैं (मत्ती 13:57; यूहन्ना 18:37; इब्रानियों 3:1)। उसे इन पदों पर परमेश्वर द्वारा अभिषेक किया गया है (लूका 4:18)।

यीशु का शासक और याजकाई पृथ्वी से नहीं, बल्कि स्वर्ग से होते हैं: ''और यदि वह पृथ्वी पर होता, तो कभी याजक न होता, ...'' (इब्रानियों 8:4)। यीशु परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ स्वर्ग में याजक है (इब्रानियों 8:1), जहां से अब वह हर चीज़ पर राज करता है (इफिसियों 1:20-22; 1 पतरस 3:22)। जकर्याह नबी ने लिखा है, ''वही ... महिमा पाएगा, और अपने सिंहासन पर विराजमान होकर प्रभुता करेगा। और उसके सिंहासन के पास एक याजक भी रहेगा, और दोनों के बीच मेल की सम्मति होगी'' (जकर्याह 6:13)। यीशु याजक के रूप में अपने शासन और पद में अपनी वापसी तक बना रहेगा, जो उसे परमेश्वर के दाहिने हाथ ऊंचा किया जाने के समय मिला था। उस समय वह अपना शासन त्याग देगा (1 कुरिन्थियों 15:22-28)। उसका कोई सांसारिक राज्य या याजकाई नहीं होगी।

''यीशु मसीह'' का नाम और उपाधि पौलुस के लेखों में उन्नियासी बार मिलती है। इसके उल्टे क्रम ''मसीह यीशु'' का इस्तेमाल नब्बे बार हुआ है। यीशु पहले लगाया जाना मसीह के उद्धार करने वाले के रूप में उसकी पहचान पर ज़ोर देता है। मसीह ख्रिस्तुस, उद्धारकर्त्ता के रूप में उसके पद पर ज़ोर देता है। सम्भवतया क्रम में अन्तर पर बहुत ज़ोर नहीं दिया जाना चाहिए।

''परमेश्वर की इच्छा से'' (1:1)

परमेश्वर की इच्छा से शब्दों का इस्तेमाल करते हुए पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि परमेश्वर ने उसे प्रेरित होने के लिए चुना। प्रेरित होने के लिए वह न तो अपने आप चुना गया और न ही मनुष्यों द्वारा उसे ठहराया गया था। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि झूठे, अपने आप बने प्रेरित धोखा देने में सक्रिय थे (2 कुरिन्थियों 11:13)। पौलुस वास्तविक प्रेरित जिसे यीशु के प्रकाशन के द्वारा यह ज़िम्मेदारी दी गई थी। वह परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा प्रेरित था न कि अपनी खूबी या किसी की पसन्द के द्वारा (1 कुरिन्थियों 15:10)।

''परमेश्वर की इच्छा [*thelēma*]'' सारे इतिहास की मुख्य घटनाओं का केन्द्र है। इस तथ्य का कि कोई बात परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हो रही है अर्थ यह नहीं है कि उसने इसे करवाया। जब लोग वह करते हैं जो सही होता है और परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, तो वे उसकी इच्छा पूरी कर रहे होते हैं (1 यूहन्ना 3:22)। वह हमें अपनी इच्छा पूरी करने के लिए विवश नहीं करता, बल्कि जब हम अपने आपको उसकी सेवा में समर्पित कर देते हैं, तो वह हमारे द्वारा काम करता है (रोमियों 15:32; 2 कुरिन्थियों 8:5; फिलिप्पियों 2:13)।

परमेश्वर ने जैसे दूसरे महान लोगों को उनके जन्म से पहले चुना था (न्यायियों 13:5; यशायाह 49:1; यिर्मयाह 1:5; लूका 1:13-17), वैसे ही उसने पौलुस को उसके जन्म से पहले प्रेरित होने के लिए चुना। पौलुस ने लिखा है कि परमेश्वर ने ''मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया'' (गलातियों 1:15)।

पौलुस के यह कहने कि वह ''परमेश्वर की इच्छा'' से प्रेरित था और यह कहने कि उसे विशेष गवाह बनने के लिए यीशु द्वारा ठहराया गया था, कोई उलझन नहीं है (प्रेरितों 26:16)। यीशु द्वारा पौलुस को नियुक्त करना पिता की इच्छा के अनुसार ही होगा क्योंकि यीशु उसी की इच्छा पूरी करने के लिए आया (यूहन्ना 5:30)।

''और भाई तीमुथियुस'' (1:1)

नये नियम के एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में **तीमुथियुस** का नाम चौबीस बार आया है। आयत 1 में पौलुस ने कहा कि तीमुथियुस ने अपना सलाम भेजा, जो सम्भवतया इस बात का संकेत था कि तीमुथियुस कुलुस्से के कुछ लोगों को जानता था। पौलुस ने 2 कुरिन्थियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों 1 थिस्सलुनीकियों, 2 थिस्सलुनीकियों और फिलेमोन में आरम्भिक सलाम में उसे शामिल किया। उसके नाम का होना यह सुझाव देता है कि पत्र लिखे जाने के समय वह पौलुस के साथ था। इफिसियों को लिखते समय पौलुस ने उसका नाम नहीं लिखा, चाहे उसकी जेल की अन्य पत्रियों की तरह यह पत्री भी उसी समय लिखी गई लगती है।

तीमुथियुस *Timotheos* का अर्थ ''परमेश्वर का आदर करना'' या ''जो परमेश्वर

को आदर देता है।'' तीमुथियुस का पिता यूनानी था जबकि उसकी माता यूनीके एक यहूदी विश्वासिनी थी (प्रेरितों 16:1)। उसकी नानी लुईस के साथ उसकी मां ने उसे पवित्र शास्त्र की शिक्षा उसके बचपन से ही दी थी और उसके धार्मिक जीवन को जिससे उसका धार्मिक जीवन बहुत प्रभावित था (2 तीमुथियुस 1:5; 3:15)। पौलुस ने उसे यीशु का वचन सिखाया था और सिखाने, जीने और सताव में स्थिर रहने में उसके लिए आदर्श था (2 तीमुथियुस 2:2; 3:10, 11, 14)। यह तथ्य कि पौलुस ने उसे ''हे पुत्र'' कहा (1 तीमुथियुस 1:18; 2 तीमुथियुस 1:2; 2:1) का अर्थ हो सकता है कि पौलुस ने ही उसे बपतिस्मा दिया हो। तीमुथियुस लुस्त्रा का रहने वाला था इसलिए उसने पौलुस को अपनी मिशनरी यात्रा के दौरान वहां पथराव होते हुए देखा हो सकता है (प्रेरितों 14:19; 2 तीमुथियुस 3:11)।

तीमुथियुस के नाम का होना किसी प्रकार से यह अर्थ नहीं देता कि उसने पौलुस के पत्र लिखने में उसकी सहायता की। तीमुथियुस ने पौलुस से सीखा था न कि पौलुस ने तीमुथियुस से (2 तीमुथियुस 2:2)। अपना परिचय प्रेरित के रूप में बताकर और अपने आपको प्रेरित होने और तीमुथियुस के प्रेरित न होने का संकेत देकर पौलुस ने इस पद में अपने आपको बिल्कुल अलग किया। तीमुथियुस के पास वह अधिकार नहीं था, जो प्रेरित के पास था।

फिलिप्पियों और फिलेमोन में पौलुस द्वारा लिखे संदेश में पहली आयत में शामिल किए जाने के बाद तीमुथियुस का नाम नहीं है। परन्तु कुलुस्सियों के नाम पत्र के परिचय में पौलुस ने ''हम'' का इस्तेमाल जारी रखा जो उसने आयत 9 तक तीमुथियुस नहीं है। आयत 13 में ''हमें'' का अर्थ पौलुस और तीमुथियुस के साथ-साथ कुलुस्सियों भी है। आयत 23 में पौलुस व्यक्तिगत सर्वनाम ''मैं'' का इस्तेमाल करने लगा। पौलुस के पत्र में बाद में ''हम'' और ''हमें'' का इस्तेमाल करते हुए तीमुथियुस को शामिल किया गया हो सकता है (कुलुस्सियों 1:28; 4:3); परन्तु एक सम्पादकीय अर्थ में केवल अपनी बात करते हुए पौलुस ने इन शब्दों का इस्तेमाल किया हो सकता है।

इस बात में कि ''मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे'' (फिलिप्पियों 2:20) में तीमुथियुस के लिए पौलुस के मन में अत्यधिक सम्मान का पता चलता है। इसे दो प्रकार से लिया जा सकता है या तो और कोई नहीं था जो साथी मसीही लोगों के लिए पौलुस के साथ उतनी ही चिंता करने वाला हो या फिलिप्पियों के लिए और किसी को इतनी चिंता नहीं थी, जितनी तीमुथियुस को। पौलुस की बात का अर्थ सम्भवतया पौलुस के मन में बाद वाली बात थी।

अन्ताकिया में दूसरी मिशनरी यात्रा के समय उन मण्डलियों में दोबारा जाने के लिए जिन्हें उन्होंने अपनी पहली मिशनरी यात्रा के समय आरम्भ किया था अपने साथ बरनबास के भाई मरकुस को साथ लेने या न लेने पर पौलुस और बरनबास में झगड़ा हुआ था। इसका परिणाम यह हुआ था कि बरनबास मरकुस को लेकर साइपरस में चला गया था, जबकि पौलुस सिलास के साथ सीरिया और किलिकिया में से गया था (प्रेरितों 15:36-41)। लुस्त्रा में पहुंचकर पौलुस तीमुथियुस को अपने साथ लेना चाहा। यहूदियों का समर्थन पाने के लिए (1 कुरिन्थियों 9:21) उसने तीमुथियुस का खतना किया (प्रेरितों 16:1-3)।

खतना उद्धार के लिए शर्त नहीं है, बल्कि यह मसीही लोगों के लिए वैकल्पिक है

(1 कुरिन्थियों 7:18, 19; गलातियों 5:6; 6:15)। पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यरूशलेम में प्रेरितों और प्राचीनों ने यह आदेश दिया था कि मूसा की व्यवस्था को पूरा करना और खतना किया जाना अन्यजाति मसीही लोगों के लिए अनावश्यक थे। पौलुस के अन्ताकिया में रहते समय इस प्रश्न पर बड़ा विवाद खड़ा हो गया था, और यह बहस उनके यरूशलेम में पहुंचने तक जारी रही (प्रेरितों 15:1, 5, 24-29)। पौलुस ने चाहे तीमुथियुस का खतना किया था परन्तु उसने तीतुस का खतना करने से इनकार कर दिया (गलातियों 2:3-5)। परिस्थितियां एक जैसी नहीं थीं। कलीसिया तीतुस पर खतना थोपने की कोशिश कर रही थी। इससे तीतुस की आजादी पर हमला होना था और अन्य मसीही लोगों में गलत संदेश जाना था कि खतना आवश्यक है। चाहे यह आवश्यक नहीं था फिर भी पौलुस ने खतना रहित अन्यजाति के साथ मिलने के दाग को मिटाने के लिए तीमुथियुस का खतना कर दिया। यहूदियों में प्रभावशाली ढंग से वह केवल इसी प्रकार प्रचार कर सकता था।

तीमुथियुस दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान और पौलुस के शेष जीवन में उसका साथी रहा था। चाहे वह एशिया माइनर से था पर अधिकतर पौलुस के साथ वह उसकी यूरोपीय सेवकाई में साथ रहा था, जिसका आरम्भ पौलुस को मकिदुनिया में जाने की बुलाहट के बाद हुआ था (प्रेरितों 16:9, 10)। तीमुथियुस का अन्तिम बार उल्लेख या तो 2 तीमुथियुस 1:2 में है या इब्रानियों 13:23 में, जहां कहा गया है, ''तुम यह जान लो कि तीमुथियुस हमारा भाई छूट गया है और यदि वह शीघ्र आ गया, तो मैं उसके साथ तुम से भेंट करूंगा।'' यदि तीमुथियुस उस समय पौलुस के साथ था तो यह प्रमाण हो सकता है कि इब्रानियों की पुस्तक पौलुस ने लिखी। इसके बाद तीमुथियुस के बारे में और कुछ पता नहीं है। उसके नाम का उल्लेख आरम्भिक मसीही साहित्य में नहीं मिलता है।[6]

पौलुस ने तीमुथियुस को यहां और 2 कुरिन्थियों 1:1; और फिलेमोन 1; इब्रानियों 13:23 में **हमारा भाई** [*ho,* मूल में ''*the*''] कहा गया है। और कहीं भी उसने निश्चित उपपद के बिना ऐसे ही हवाले दिए (1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:1)। 1 तीमुथियुस 1:2 और 2 तीमुथियुस 1:2 में पौलुस ने उसे ''बच्चा'' और ''पुत्र'' कहा, जिसमें दोनों ही यूनानी शब्द *teknon* (''बच्चा'') से लिए गए हैं। तीमुथियुस के प्रति उसका लगाव ''मेरा सच्चा पुत्र'' और ''मेरा प्रिय पुत्र'' वाक्यांशों में दिखाई देता है। क्वारतुस (रोमियों 16:23), सोस्थिनेस (1 कुरिन्थियों 1:1) और अपुलोस (1 कुरिन्थियों 16:12) के इस्तेमाल में भी निश्चित उपपद का इस्तेमाल किया गया है।

पौलुस ने तीमुथियुस को ''साथी प्रेरित'' नहीं कहा क्योंकि उसे प्रेरिताई का अधिकार नहीं मिला था। नये नियम में ''भाई'' और ''भाइयों'' (*adelphos* से) का इस्तेमाल शरीर में भाइयों (मत्ती 4:18; 12:47; प्रेरितों 1:14; 12:2; गलातियों 1:19), एक ही जाति या राष्ट्रीयता वालों (प्रेरितों 2:29; 3:17, 22; 7:2; 9:17) और आत्मिक भाइयों यानी मसीह में भाइयों (प्रेरितों 9:30; 10:23; 21:20; रोमियों 14:10) के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

''भाई'' का इस्तेमाल उपाधि के लिए नहीं किया जाता, बल्कि यह सम्बन्ध की एक अभिव्यक्ति है। सब मसीही लोगों को मसीह में भाई होने के नाते बराबर माना जाता है (गलातियों 3:26-28); परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्हें एक जैसी जिम्मेदारियां, दान

या अधिकार मिले हैं (रोमियों 12:6-8)। इस तथ्य के आधार पर कि मसीह के चेले भाई हैं, अगुओं को विशेष उपाधियों वाले नाम नहीं अपनाने चाहिए, जो उन्हें दूसरे चेलों से अलग करते हैं (देखें मत्ती 23:8-10)।

हनन्याह ने पौलुस को उसके पाप धोए जाने से पहले ''भाई शाऊल'' कहा कइयों ने इससे और इस तथ्य से कि पौलुस ने यीशु को ''प्रभु'' कहा (प्रेरितों 22:16); कुछ लोगों ने यह निष्कर्ष निकाल दिया है कि पौलुस को नया जन्म दमिश्क के निकट यीशु का दर्शन पाने के समय मिला था (और इस तथ्य से कि पौलुस ने यीशु को ''प्रभु'' कहा; प्रेरितों 9:5; 22:8; 26:15)प्रेरितों 9:5 की टिप्पणी के रूप में एक अध्ययन बाइबली में यह व्याख्या मिलती है: ''आयतें 3-9 में दमिश्क नगर के बार पौलुस के मन परिवर्तन का विवरण है। ... पौलुस को हनन्याह द्वारा 'भाई शाऊल' कहा गया है (आयत 17)। हनन्याह यह मान लेता है कि पौलुस एक विश्वासी है जिसने नया जन्म पा लिया है (यूहन्ना 3:3-5)।''[17]

कई अवसरों पर पतरस और पौलुस ने यहूदियों को जो मसीही नहीं थे, ''भाई'' या ''भाइयो'' कहा (प्रेरितों 2:29; 3:17; 7:2; 13:15, 26, 38; 22:1; 23:1, 5, 6; 28:17)। हनन्याह ने पौलुस को भाई *मसीही* के रूप में नहीं, बल्कि भाई *यहूदी* के रूप में बुलाया। पौलुस ने अभी परमेश्वर की संतान बनने के लिए बपतिस्मा नहीं लिया था, न ही उसे पवित्र आत्मा मिला था (प्रेरितों 9:17)। यीशु को ''प्रभु'' कहकर उसकी बात मानना काफ़ी नहीं था (मत्ती 7:21; लूका 6:46)। उसे हनन्याह द्वारा बताया गया था कि अपने पापों को धोने के लिए प्रभु का नाम कैसे लेना है।

पौलुस ने तीमुथियुस को ''भाई'' कहा, क्योंकि वह न केवल पौलुस का मसीही भाई था बल्कि कुलुस्से और संसार भर के मसीही लोगों का भी भाई था। उसने कुआरतुस, सोस्थिन और अपुलोस सहित अन्य मसीही लोगों को ''भाई'' कहा (रोमियों 16:23; 1 कुरिन्थियों 1:1; 16:12)। इन मामलों में पौलुस द्वारा ''भाई, सांसारिक भाई, कलीसिया में उपाधि या पदवी के लिए इस्तेमाल नहीं किया गया।''

कुलुस्से के विश्वासी भाइयों के नाम (1:2)

[2]मसीह में उन पवित्र और विश्वासी भाइयों के नाम जो कुलुस्से में रहते हैं। हमारे पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त होती रहे।

कलीसियाओं के नाम लिखते समय पौलुस द्वारा अलग-अलग शब्दों के इस्तेमाल का शायद कोई महत्वपूर्ण कारण नहीं बताया जा सकता। थिस्सलुनीके के, कुरिन्थियों और गलातियों को कलीसियाएं कहकर सम्बोधित किया। रोमियों, इफिसियों, कुलुस्सियों और इफिसियों के नाम पत्र लिखते हुए उसने ''पवित्र लोग'' कहा। ''कलीसिया'' शब्द का अर्थ मसीही लोगों के रूप में संगठित समूह है, जबकि ''पवित्र लोग'' या संत उन लोगों के लिए इस्तेमाल किया गया है जिनसे वह समूह बनता है। उसमें ''पवित्र लोग'' या संत शब्द का इस्तेमाल अपने पत्रों को अधिक निजी स्पर्श देने के लिए किया हो सकता है।

''मसीह में उन पवित्र और विश्वासी भाइयों के नाम जो कुलुस्से में रहते हैं ''(1:2)

पवित्र लोग (*hagioi*) का अनुवाद ''संत'' ही किया जाता है। इसके सहजातीय क्रिया शब्द (*hagiazō* ''पवित्र करना'') का अर्थ किसी विशेष उद्देश्य के लिए ''अलग करना'' है। मसीही लोगों के सम्बन्ध में इसका अर्थ परमेश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संसार के बुरे व्यवहारों से अलग किए हुए है। पवित्र लोग मसीही समुदाय के भीतर जिन्हें संत घोषित किया गया है। बल्कि यीशु के सभी चेले हैं (प्रेरितों 26:10; रोमियों 8:27; 12:13; 2 कुरिन्थियों 13:13; 16:2; 2 कुरिन्थियों 1:1; इफिसियों 1:1), यानी जिन्होंने सांसारिक जीवन से अपने आपको अलग किया (2 कुरिन्थियों 6:17)। उन्हें अंधकार में से मसीह के राज्य में और परमेश्वर की अद्‌भुत ज्योति में बुलाया गया है (प्रेरितों 26:18; कुलुस्सियों 1:13; 1 पतरस 2:9)। ''पवित्र लोग'' या संत शब्द का इस्तेमाल उनके व्यवहार के पाप रहित होने के लिए नहीं, बल्कि उनके बुलाए जाने के लिए है। इस तथ्य के बावजूद कि कलीसिया के कुछ लोग आत्मिक रूप में बीमार, डॉक्ट्रिन या शिक्षा के सम्बन्ध में परेशान और नैतिक रूप में भ्रष्ट थे, पौलुस ने कुरिन्थुस की मण्डली के लोगों को ''पवित्र लोग'' यानी संत कहा (1 कुरिन्थियों 1:2)।

पौलुस दो अलग-अलग समूहों से बात नहीं कर रहा था जिनमें एक ''पवित्र लोग'' थे और दूसरे ''विश्वासी भाई।'' दोनों अभिव्यक्तियों के साथ केवल एक उपपद (*tois*)का इस्तेमाल किया गया है जिसका अर्थ है कि ये दो अलग-अलग समूह नहीं, बल्कि दो अलग-अलग प्रकार से वर्णित वही समूह हैं।

रॉबर्ट जी. ब्रेचर और यूजीन ए. निडा ने लिखा है:

> यूनानी धर्मशास्त्र का रूप ''पवित्र लोगों'' के साथ [रिवाइज़्ड स्टैंडर्ड वर्ज़न (RSV)] को विशेषण के रूप में, *भाइयों* को सुधारकर, जैसे *विश्वास योग्य* व्यक्ति करता है कि मांग करता प्रतीत होता है, क्योंकि पूरे वाक्यांश के साथ एक ही उपपद है: ''हमारे पवित्र और विश्वासी भाइयों के नाम।''[8]

यही नियम यूहन्ना 3:5 में चलता है, जहां ''जल और आत्मा से'' वाक्यांश में उपसर्ग से (*ex*) सुझाव देता है कि इसका अर्थ एक जन्म है, न कि दो। एक जन्म में दो तत्व हैं, ''जल और आत्मा।''

> यूहन्ना ''आत्मा'' से पहले दूसरा ''से'' (*ex*) नहीं रखता,जैसे वह दो अलग-अलग घटनाओं का वर्णन कर रहा हो। एक ही *ex* एक अवसर का वर्णन करता है। इसका अर्थ यह हुआ कि यह एक होना पूरी तरह से अनिश्चित भूतकाल सूचक कर्मवाच्य द्वारा स्थापित होता *gennethe* है, जिसका अर्थ मूल में जल और आत्मा से ''एक बार जन्म'' है। ...
>
> इन तथ्यों को मिलाने पर यूहन्ना 3:3-5 के किसी हवाले को दो बपतिस्मों या जन्मों (प्राकृतिक जन्म के बाद) अर्थात ''पानी का बपतिस्मा'' और बाद में ''आत्मा का बपतिस्मा'' या धर्मी ठहराए जाने का पूर्व ''पुनर्जीवन'' और बाद में ''आत्मा का बपतिस्मा'' के हवाले को ढूंढ़ने के लिए किसी भी प्रवृत्ति के विरुद्ध सावधान करने वाले

होने चाहिए ...

आत्मिक रूप में व्यक्ति केवल एक बार जन्म लेता है और वह जन्म ''जल और आत्मा से'' होता है।[9]

विश्वासी के लिए यूनानी शब्द *pistoi* संज्ञा शब्द ''विश्वास'' (*pistis*) और क्रिया शब्द ''प्रतीति'' (*pisteuō*) वाले मूल शब्द से निकला है। यीशु के अनुयायियों के वर्णन के लिए विशेषण के रूप में इसके इस्तेमाल का अर्थ यह नहीं है कि यह शब्द हर बार मसीही लोगों से जुड़ा हुआ है। कोई सेवक अपने स्वामी का विश्वासी (मत्ती 24:45; 25:21, 23), कर्मचारी अपने नियोक्ता का (लूका 12:42; 1 कुरिन्थियों 4:2) कोई अपनी ज़िम्मेदारियों के प्रति (लूका 16:10) और मसीही व्यक्ति मसीह का (प्रेरितों 16:15) विश्वासी हो सकता है। परमेश्वर और यीशु को विश्वासयोग्य कहा गया है (1 कुरिन्थियों 1:9; 2 थिस्सलुनीकियों 3:3), जैसे परमेश्वर की सेवा करने वाले लोग होते हैं (कुलुस्सियों 1:7; 4:7, 9; 1 तीमुथियुस 1:12; इब्रानियों 3:5; 1 पतरस 5:12; प्रकाशितवाक्य 2:13)। यूनानी भाषा में इस शब्द का इस्तेमाल बच्चों के सम्बन्ध में जो माता-पिता के विश्वासयोग्य और आज्ञाकार हैं तीतुस 1:6 में इस्तेमाल किया गया है, जिसमें माता-पिता परिवार के बुज़ुर्ग के रूप में हैं।

कुलुस्से के **भाइयों** को ''विश्वासी'' बताया गया है। पौलुस ने उन्हें ''विश्वासी'' शायद उन में अपने भरोसे को दिखाने और उन्हें अपने मसीही चलन में प्रोत्साहित करने के लिए कहा। अभिप्राय यह है कि वे यीशु के वफ़ादार थे, क्योंकि उन्होंने उस में अपना विश्वास रखा था और उसके पीछे ईमानदारी से चल रहे थे। वे धीरज से, बिना डोले और निरन्तर यीशु की सेवा कर रहे थे।

उन का ''भाइयों'' के रूप में होना परमेश्वर की संतान के रूप में उन के आत्मिक सम्बन्ध पर आधारित था (गलातियों 3:26)। मसीह में आकर और बपतिस्मे में उसे पहनकर वे एक ही परिवार के लोग बन गए थे (गलातियों 3:27)। ''पवित्र लोग'' और ''भाइयों'' चाहे पुरुषवाचक शब्द हैं पर इसमें भाई और बहनें दोनों शामिल हैं। यानी वे मसीह में एक (गलातियों 3:28), उसकी एक देह के अंग हैं (1 कुरिन्थियों 12:13)। मसीही लोगों के रूप में हमें यह समझ होनी आवश्यक है कि हम सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। हम एक ही परिवार के लोग हैं इसलिए हमें इकट्ठे रखने का एक ही बंधन है।

मसीह में होने का अर्थ एक ही आत्मिक दायरे में होना है। यीशु ने उस में होने के विचार का परिचय दिया (यूहन्ना 6:56; 14:20; 15:1-7)। पौलुस ने अपने लेखों में ''मसीह में'' होने की इस अवधारणा को मिला दिया (रोमियों 8:1; 1 कुरिन्थियों 15:18; 2 कुरिन्थियों 5:17; कुलुस्सियों 1:4, 28; 2:5)।

कुलुस्से के लोग ''मसीह में'' थे, क्योंकि उनके विश्वास ने उन्हें ''मसीह में'' बपतिस्मा लेने के लिए प्रेरित किया था (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27)। बपतिस्मे के द्वारा जो लोग मसीह में प्रवेश करते हैं उन्हें ''हर आत्मिक आशीष'' मिली है (इफिसियों 1:3), जिसमें ''अपराधों की क्षमा'' (इफिसियों 1:7), ''अनुग्रह'' (2 तीमुथियुस 2:1), और ''अनन्त जीवन'' (1 यूहन्ना 5:11) शामिल हैं। इफिसियों 2:13 कहता है, ''पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर

थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो।'' जो लोग यीशु से बाहर हैं उन्हें मसीह से अलग किया गया है यानी वे आशा के बिना और परमेश्वर के बिना हैं (इफिसियों 2:12)।

यह पत्र बेशक उन्हें लिखा गया था, **जो कुलुस्से में रहते** थे, पर है यह दूसरों के लिए भी (4:16)। पौलुस के पत्रों को प्रेरित पतरस की स्वीकृति मिलती थी और उन्हें भी दूसरे सब पवित्र शास्त्रों के साथ आदर दिया जाना आवश्यक है (2 पतरस 3:15, 16)। उन में हर युग के हर मसीही के लिए निर्देश है। जो कुछ पौलुस ने लिखा है वह यीशु की आज्ञा है (1 कुरिन्थियों 14:37)।

''हमारे पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त होती रहे'' (1:2)

पौलुस ने लिखा **तुम्हें अनुग्रह और शान्ति** मिलती रहे, जो उसके अधिकतर अन्य पत्रों में सलाम लिखने जैसा है। ''अनुग्रह'' यूनानी सलाम है (आम तौर पर सांसारिक यूनानी में यह सामान्य क्रिया *chairein*) और ''शान्ति'' एक यहूदी ''अनुग्रह'' (*charis*) मनोहरता, सुन्दरता और समर्थन है, जो किसी व्यक्ति के पास है या उसके द्वारा व्यक्त किया जाता है और उन लोगों द्वारा पाया जाता है जिन्हें यह दिया जाता है। पवित्र शास्त्र में ''अनुग्रह'' शब्द के पांच उपयोग बताए गए हैं।

1. कृपालु होना या दयालु (लूका 4:22; कुलुस्सियों 4:6)।
2. स्वीकृति या समर्थन (लूका 1:30; प्रेरितों 2:47)।
3. दान (2 कुरिन्थियों 4:15; 8:4)।
4. धन्यवाद और आभार (लूका 17:9; 1 कुरिन्थियों 15:57; कुलुस्सियों 3:16; 2 तीमुथियुस 1:3)।
5. समर्थन जिसे कमाया न गया हो और जिसके योग्य न हो, परन्तु नि:शुल्क दिया गया हो (रोमियों 3:24; इफिसियों 2:8)।

मत्ती या मरकुस की पुस्तक में चाहे *charis* नहीं मिलता, परन्तु लूका में यह आठ बार, यूहन्ना में चार बार और पौलुस के पत्रों में एक सौ बार मिलता है।

सप्तति (LXX) में इब्रानी शब्द *chen* के अनुवाद के रूप में *charis* शब्द मिलता है, यह किसी बड़े व्यक्ति द्वारा दी गई आशिषों के आनन्द को दिखाता है। इसका इस्तेमाल लोगों पर दिखाए गए परमेश्वर के अनुग्रहकारी समर्थन और दयालुता के लिए हो सकता है। दयालुता (रोमियों 15:15) या पापियों पर दिखाए गए उसके समर्थन के लिए जिसके कोई योग्य न हो (इफिसियों 2:8) हो सकता है। परमेश्वर और मनुष्य के बीच के फासले को अनुग्रह के द्वारा मिटाया गया है।

यीशु ने अपने लहू के द्वारा (इफिसियों 1:7) जो उसने क्रूस पर बहाया, सब लोगों के लिए अनुग्रह की पेशकश की है (रोमियों 5:15)। इस अनुग्रह तक पहुंच विश्वास के द्वारा (रोमियों 5:2) अर्थात उस विश्वास के द्वारा होती है, जो परमेश्वर की इच्छा को मानने वाला है (याकूब 2:24)। उद्धार परमेश्वर के अनुग्रहकारी होने के कारण दिया जाता है (इफिसियों 2:8, 9) और

इसे मानवीय गुण के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। यीशु ने चाहे अपने लोगों के लिए उद्धार को कमाया (मत्ती 1:21) परन्तु उस उद्धार को केवल उसके आज्ञापालन के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है (इब्रानियों 5:9)। उसने अपनी मृत्यु में दूसरों के हाथों में अपने आपको दे दिया; इस बात में उसने उद्धार दिलाने के लिए कोई काम नहीं किया। इसी प्रकार से उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लेने के लिए (रोमियों 6:3) और पापों की क्षमा पाने के लिए (प्रेरितों 2:38) दूसरे के हाथ अपने आपको देना आवश्यक है। मसीह में अनुग्रह (2 तीमुथियुस 2:1) तब प्रभावी होता है जब पापी व्यक्ति मसीह में बपतिस्मा लेता है। मानवीय गुण के धार्मिक कामों के द्वारा नहीं बल्कि विनम्रतापूर्वक अधीनता के द्वारा नये जन्म का स्नान प्राप्त होता है (तीतुस 3:5-7)। इस कारण उद्धार यीशु की मृत्यु और जीवन के द्वारा दिया जाता है (रोमियों 5:9, 10)।

कुलुस्सियों के नाम अपने सलाम में पौलुस उस न कमाए हुए समर्थन की बात नहीं कर रहा था, जिससे उद्धार मिलता है। उन्हें उद्धार पहले ही मिल चुका था। बल्कि वह चाहता था कि वे अपने अनुग्रहकारी सृष्टिकर्त्ता की ओर से प्रतिदिन समर्थन पाते रहें, जिसने उन की शारीरिक और आत्मिक भलाई के लिए उपाय करना था। मसीहियत में केवल उद्धार के लिए अनुग्रह पाना ही नहीं, बल्कि निरन्तर बहुतायत का जीवन भी है (यूहन्ना 10:10), जिससे आत्मा के लिए एक स्वस्थ संतुष्टि मिलती है। यही वह अनुग्रह है जिसे पौलुस ने उनके लिए परमेश्वर से चाहा।

पौलुस ने **परमेश्वर की ओर से शान्ति** का भी उल्लेख किया। ''शान्ति'' के लिए इब्रानी भाषा का शब्द *shalom* है जिसका अर्थ परमेश्वर की ओर से आशिषें मिलने के कारण स्वस्थ स्थिति है। ''शान्ति'' के लिए यूनानी शब्द *eirēnē* है। शान्ति में मेल, निर्विवाद भलाई, परेशान मन से मुक्ति, और बिना झगड़े या आन्तरिक क्लेशों का आत्मिक चयन आ जाता है। यीशु अपने चेलों के लिए शान्ति देता है। यह वह शान्ति नहीं है जो संसार देता है (यूहन्ना 14:27), न ही यह बिना क्लेश के शान्ति है (यूहन्ना 16:33)।

यह पत्र मसीही लोगों को लिखा गया था जिन्हें यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ मिलाए जाने से शान्ति पहले ही मिल चुकी थी। इस शान्ति की चर्चा कुलुस्सियों 1:20-22 में की गई परन्तु यहां पर पौलुस की चिंता इस बात पर थी कि वह निरन्तर शान्ति की इच्छा कर रहा था जिससे परमेश्वर के साथ मेल होता है, यानी परेशान संसार के बीच में शांत और स्थिर मन।

मसीही लोगों के रूप में हमारे लिए ''विश्राम और चैन'' के साथ जीवन के लिए प्रार्थना करनी (1 तीमुथियुस 2:2) और अपनी चिंताओं को अपनी प्रार्थनाओं में परमेश्वर को दे देना आवश्यक है (1 पतरस 5:7)। परिणाम यह होगा कि ''परमेश्वर की शान्ति, जो समझ के बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी'' (फिलिप्पियों 4:6, 7)। परमेश्वर की शान्ति पाने के लिए हमारी सोच और काम परमेश्वर की उम्मीदों के साथ मेल खाते होने चाहिए (फिलिप्पियों 4:8, 9)। पौलुस की इच्छा थी कि कुलुस्सियों को अनुग्रह और शान्ति परमेश्वर की ओर से जो इसका एकमात्र सच्चा देने वाला है, मिले।

पौलुस ने अपने सलाम को समाप्त करने के लिए **हमारे पिता परमेश्वर की ओर से** जोड़ दिया। पौलुस के पत्रों के परिचय में आयत 2 ही एकमात्र स्थान है जिसमें ''और यीशु मसीह'' को जोड़े बिना पिता का उल्लेख है। ''परमेश्वर'' शब्द परमेश्वरत्व के लिए है। पिता की बात करने

के अलावा यीशु के सम्बन्ध में ''परमेश्वर'' (यूहन्ना 1:1) और पवित्र आत्मा (प्रेरितों 5:3, 4) का भी इस्तेमाल होता है। नये नियम में भी बहुत से मामलों की तरह यहां पर यीशु और पवित्र आत्मा के बजाय पिता के लिए परमेश्वर इस्तेमाल हुआ है। मसीही लोग परमेश्वर को आरम्भ और सम्भाल के अर्थ में ''हमारा पिता'' कह सकते हैं। जिस प्रकार से बच्चा अपने अस्तित्व और देखभाल के लिए अपने सांसारिक पिता का देनदार होता है, वैसे ही अपने अस्तित्व और अपनी आवश्यकता की हर चीज़ उपलब्ध करवाने के लिए चाहे वह शारीरिक हो या आत्मिक, सब लोग परमेश्वर के देनदार हैं। एक विशेष अर्थ में मसीही लोग उसे *अपना पिता* कह सकते हैं। पौलुस ने कई बार ''हमारे पिता'' वाक्यांश का इस्तेमाल किया, जिसमें अधिकतर सलामों या अभिवादनों में है। यीशु ने चेलों को बजाय कि परमेश्वर को ''हमारा पिता'' कहकर सम्बोधित करें। बार-बार मसीह ने परमेश्वर को ''तुम्हारा पिता'' कहा (जैसे मत्ती 5:16, 45)।

और अध्ययन के लिए

''मसीह में''

''मसीह में'' होने की महत्वपूर्ण अवधारणा का इस्तेमाल अधिकतर पौलुस द्वारा किया गया है (उसके पत्रों के बाहर यह शब्द यूहन्ना 15:2-6; 1 पतरस 3:16; 5:14; 1 यूहन्ना 1:5; 2:5; 27, 28; 3:6; 5:11; प्रकाशितवाक्य 14:13 में मिलता है)। कुलुस्सियों 1 और 2 में पौलुस ने यीशु के गुणों और उस सम्बन्ध के वर्णन के लिए जो मसीही लोगों का उसके साथ है ''मसीह में'' किया। उसमें शब्दों का इस्तेमाल किया।

- मसीह में आत्मिक सम्बन्ध रखने वाले (1:2, 4, 28)।
- उसकी जीवित रखने वाली सामर्थ (1:17)।
- सारी सृष्टि की आवश्यकताओं को पूरा करने की उसकी परिपूर्णता (1:19)।
- वह आत्मिक दायरा, जिसमें मसीही लोगों को चलना और बनना है (2:6, 7)।
- उसका सम्पूर्ण ईश्वरत्व (2:9)।
- उसका मसीही लोगों को सम्पूर्ण बनाना (2:10)।
- आत्मिक खतना, जिसे वह बपतिस्मे में देता है (2:11)।

अपने अन्य पत्रों में पौलुस ने उसके साथ अपने आत्मिक सम्बन्ध के कारण यीशु के आत्मिक चेलों के वर्णन के लिए ''मसीह में'' और ''उस में'' का वर्णन किया। यह लोग अलग-अलग मण्डलियों के सदस्य या मसीही थे जो ''मसीह में'' या ''प्रभु में'' थे।[10]

हर प्रकार की आत्मिक आशीष ''मसीह में'' है (इफिसियों 1:3)। इन आशिषों में निम्न बातें पाई जाती हैं:

1. छुटकारा (रोमियों 3:24; इफिसियों 1:7)
2. क्षमा (इफिसियों 1:7; कुलुस्सियों 1:14)

3. अनन्त जीवन (रोमियों 6:23; 2 तीमुथियुस 1:1; 1 यूहन्ना 5:11)
4. पवित्र किया जाना (1 कुरिन्थियों 1:2)
5. अनुग्रह (1 कुरिन्थियों 1:4; 2 तीमुथियुस 1:9; 2:1)
6. नई सृष्टि बनना (2 कुरिन्थियों 5:17)
7. मिलाए जाना (2 कुरिन्थियों 5:19)
8. धर्मी बनाए जाना (2 कुरिन्थियों 5:21)
9. परमेश्वर के निकट लाए जाना (इफिसियों 2:13)
10. उद्धार (2 तीमुथियुस 2:10)

हम ''मसीह में'' कैसे हो सकते हैं? ''मसीह में'' आने वाले व्यक्ति को उसकी हर आत्मिक आशीष मिलती है। यह सच है इस कारण दो महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर दिया जाना आवश्यक है। पहला प्रश्न है कि ''कोई मसीह में कैसे आता है?'' पौलुस का उत्तर है ''क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया'' (रोमियों 6:3); ''और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है'' (गलातियों 3:27)। बपतिस्मा लेने वालों को पहले सुसमाचार को सुनना (यूहन्ना 6:45), विश्वास करना (मरकुस 16:15, 16), मन फिराना (प्रेरितों 2:38), यीशु को प्रभु मानना (प्रेरितों 8:37; रोमियों 10:9, 10) आवश्यक है। दूसरा प्रश्न है कि ''जिसने बपतिस्मा ले लिया है उसे कैसे पता चल सकता है कि वह अभी भी मसीह में है?'' यूहन्ना के लेखों में इसका उत्तर मिलता है: ''जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है: हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उसमें हैं'' (1 यूहन्ना 2:5); ''जो उसकी आज्ञाओं को मानता है, वह उस में; और वह उन में बना रहता है: और इसी से, अर्थात उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है, हम जानते हैं, कि वह हम में बना रहता है'' (1 यूहन्ना 3:24)।

प्रासंगिकता

प्रेरित, यीशु के चुने हुए दूत (1:1)

पौलुस ने कुलुस्सियों के नाम अपने पत्र का आरम्भ उन्हें यह आश्वासन देते हुए किया कि वह यीशु मसीह का प्रेरित है (इफिसियों 4:11)। यीशु ने कुछ को प्रेरित होने के लिए दिया है, परन्तु सब लोग प्रेरित नहीं है (1 कुरिन्थियों 12:28, 29)। इन लोगों का कलीसिया में एक विशेष स्थान था।

(1) *प्रेरित सच्चाई के गोदाम थे।* प्रेरित न केवल आरिम्भक कलीसिया के लिए महत्वपूर्ण थे, बल्कि वे यीशु द्वारा उन्हें दी गई विशेष शिक्षा और अधिकार के कारण हमारे लिए भी महत्वपूर्ण हैं। उसने उन्हें सिखाकर, उन्हें प्रशिक्षित करके और उन्हें प्रचार के लिए भेजकर तैयार किया (मरकुस 3:14)।

(2) कलीसिया प्रेरितों पर बननी आवश्यक है, क्योंकि वे नींव हैं (इफिसियों 2:20)। उन्हें अपनी शिक्षाएं पवित्र आत्मा की ओर से मिलीं (इफिसियों 3:5)। यदि कोई किसी और संदेश

को बताता तो स्वर्ग की ओर से उस पर श्राप होना था (गलातियों 1:8, 9)।

(3) *प्रेरितों की शिक्षाएं आज हमारे लिए हैं।* यीशु ने प्रेरितों को अपना कमीशन देते हुए उनको काम समझाया (मत्ती 28:19, 20):

- उन्हें सब जातियों के लोगों को चेले बनाना था।
- उन्हें लोगों को उन सब बातों को मानना सिखाना था जिनकी उसने उन्हें आज्ञा दी।
- उसकी शिक्षाएं और आज्ञाएं मसीही युग के अन्त तक सब जातियों के लिए थीं।

प्रेरित लोग, जिन्होंने लिखा उन्होंने उस संदेश को जिन्हें मिला था सम्भाले रखने के लिए ऐसा किया ताकि उनकी मृत्यु के बाद लोग जान सकें कि उन पर क्या प्रकट किया गया था (2 पतरस 1:15; 3:1, 2)। जो कुछ उन्होंने लिखा उसे ''प्रभु की आज्ञा'' के रूप में माना जाना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 14:37)। मसीही लोगों के रूप में हमें सतर्क रहना आवश्यक है कि हम मसीह की उस नींव पर, जो प्रेरितों के द्वारा रखी गई थी, कैसे कायम रह सकते हैं (1 कुरिन्थियों 3:10)।

प्रेरितों को सारी सच्चाई दे दी गई थी। उन्हें इस सच्चाई को सब जातियों में जाकर सुनना था। आज की कलीसिया इसकी सच्चाइयों तक सीमित है, जो प्रेरितों को बताई गई थी। नई वाचा के अधीन प्रेरित और भविष्यद्वक्ता उस नींव का भाग हैं (इफिसियों 2:20), जिस पर सब मसीही लोगों को बनाया जाना है।

तीमुथियुस जैसा सिखाने वाला (1:1)

तीमुथियुस एक मसीही भाई और मसीह के लिए सहकर्मी था, वैसे ही जैसे पौलुस और अपुलोस सहकर्मी थे (1 कुरिन्थियों 3:3, 4) और सब मसीही लोगों को होना चाहिए। तीमुथियुस को प्रेरित होने का अधिकार या आश्चर्यकर्म के द्वारा दान नहीं मिले थे। पौलुस ने तीमुथियुस को कुलुस्सियों के नाम अपने पत्र में सलाम में उसका नाम डालकर एक सहकर्मी के रूप में अपनी स्वीकृति को दिखाया। आज के सिखाने वाले उसी श्रेणी में आते हैं जिसमें तीमुथियुस था, क्योंकि उन्हें परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लोगों से जिन्होंने नये नियम को लिखा उनकी शिक्षाओं को सीखना आवश्यक है।

(1) *तीमुथियुस की तरह हमें शिक्षा प्रेरितों से मिलती है।* यीशु की ओर से पवित्र आत्मा के द्वारा उसकी शिक्षा दी गई थी (गलातियों 1:11, 12; इफिसियों 3:5)। तीमुथियुस ने पौलुस से सीखा था कि उसे आगे क्या बताना है (2 तीमुथियुस 2:2)। हमें भी यीशु की शिक्षाओं को जानने के लिए ''जो नई वाचा का मध्यस्थ और नये नियम के निर्देश का देने वाला है, जानने के लिए प्रेरितों और नये नियम के लेखकों की ओर देखना आवश्यक है'' (इब्रानियों 2:10; 12:2, 24)। वह मसीही युग में हमारे लिए परमेश्वर के प्रकाशन का माध्यम है (इब्रानियों 1:1, 2)।

(2) *तीमुथियुस की तरह हमें जो कुछ हम दूसरों को सिखाते हैं सावधान होना आवश्यक है।* पौलुस के सहकर्मियों को जो कुछ वे सिखाते थे, उसमें वैसे ही चौकसी बरतनी आवश्यक थी जैसे यीशु और प्रेरित बरतते थे। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि उसने उसे इफिसुस

में इसलिए छोड़ा ताकि वह कुछ लोगों को समझा सके ''कि और प्रकार की शिक्षा न दें'' (1 तीमुथियुस 1:3)। याकूब ने लिखा, ''हे मेरे भाइयो, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे'' (याकूब 3:1)। न्याय के दिन यीशु कुछ लोगों से उससे दूर हो जाने को कहेगा चाहे वे उसके नाम से भविष्यद्वाणी करते रहे हों (मत्ती 7:22, 23)।

यीशु इस बात में सतर्क था कि केवल वही संदेश बताए जो उसे पिता की ओर से दिया गया था (यूहन्ना 7:16; 8:26; 14:10, 24)। उसने अपनी ओर से कोई काम या बात नहीं की; वह केवल पिता के दिए हुए शब्दों को बताता था। पवित्र आत्मा भी केवल वही संदेश सिखाने के प्रति चौकस था जो उसे यीशु की ओर से मिला था। यीशु ने उसके विषय में कहा, ''क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा'' (यूहन्ना 16:13)।

प्रेरितों को भी इस बात का ध्यान रखना था कि दूसरों को वही सच्चाई आगे बताएं, जो उन्हें बताई गई थी। पौलुस ने लिखा, ''परन्तु हम ने लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दिया, और न चतुराई से चलते, और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं, परन्तु सत्य को प्रकट करके, परमेश्वर के सामने हर एक मनुष्य के विवेक में अपनी भलाई बिठाते हैं'' (2 कुरिन्थियों 4:2)।

यीशु की ओर से पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरितों को दिया गया संदेश वही था जो पिता हम पर प्रकट करना चाहता था। अब जबकि हमारे पास वह संदेश है जिसे प्रेरितों के द्वारा इतनी सावधानी से प्रकट किया गया, तो हमें भी वही सावधानी दिखानी चाहिए और जो उन्होंने हमें पवित्र शास्त्र के द्वारा दिया है उसको न बदलें। जो लोग पवित्र शास्त्र को बिगाड़ते हैं वे अपने ही विनाश के लिए ऐसा करते हैं (2 पतरस 3:15, 16)।

विश्वासी भाई (1:2)

पौलुस कुलुस्से के लोगों को प्रभु के विश्वासी मानता था (1:2)। उसने उन्हें झूठी शिक्षाओं से चौकस रहने के लिए यह पत्र लिखा (2:8-23)। न केवल सिखाने वालों को इस बात में चौकस रहने की आवश्यकता है कि वे क्या सिखाते हैं, बल्कि हर मसीही को भी इस बात में चौकस होना आवश्यक है कि सिखाने वालों की ओर से किस बात पर विश्वास करते और उसे मानते हैं।

धोखा देने वाली शिक्षाएं हमें अविश्वासी बना सकती हैं। 2 थिस्सलुनीकियों 2:10-12 में धोखा देने वाले झूठों के सम्बन्ध में जो विश्वास करने वालों को हानि पहुंचा सकते थे, पौलुस ने लिखा झूठी शिक्षाएं उन मसीही लोगों को हानि नहीं पहुंचाएंगी, जो उनसे भरमाए नहीं जाते। भरमाए जाने से बचने के लिए मसीही लोगों के लिए सच्चाई से प्रेम करना (2 थिस्सलुनीकियों 2:10) आवश्यक है जिसे यीशु की शिक्षाओं में बने रहकर सीखा जा सकता है (यूहन्ना 8:31, 32)। सच्चाई यीशु में पाई जाती है (यूहन्ना 1:14, 17; इफिसियों 4:21)।

पतरस ने झूठी शिक्षा देने वालों को जिन्होंने ''नाश करने वाले पाखण्ड'' सिखाने थे चौकस किया (2 पतरस 2:1)। इफिसुस के प्राचीनों को निर्देश देते हुए पौलुस ने कहा कि उन्हीं में से लोग उठ खड़े होंगे, जो विकृत शिक्षाओं का प्रचार करेंगे (प्रेरितों 20:29-31)। मसीही लोगों के

लिए हर शिक्षा को जांचना आवश्यक है, ताकि वे भरमाए न जाएं (1 यूहन्ना 4:1)।

पुराने नियम की दुखद घटनाओं में से एक यहूदा के एक जवान नबी की है जिसे परमेश्वर की ओर से इस्राएल के राजा यारोबाम को संदेश देने के लिए भेजा गया था (1 राजाओं 13:1-25)। उसे परमेश्वर की ओर से, जहां उसने संदेश देना था वहां से कुछ न खाने या पीने को कहा गया था और जिस मार्ग से वह गया था उससे अलग रास्ते से वापस आने को कहा गया था।

उसने यारोबाम को संदेश दिया, जिसने उसे रुकने और अपने आपको ताज़ा करने और इनाम पाने को कहा। उसका उत्तर था कि यहोवा की ओर से इसकी मनाही की गई है।

एक बूढ़े नबी ने इस संदेश के बारे में सुना वह उसके पास गया और उससे कहा, ''जैसा तू नबी है वैसा ही मैं भी नबी हूं; और मुझ से एक दूत ने यहोवा से वचन पाकर कहा, कि उस पुरुष को अपने संग अपने घर लौटा ले आ, कि वह रोटी खाए, और पानी पीए। यह उस ने उस से झूठ कहा'' (1 राजाओं 13:18)।

जवान नबी के उस झूठ पर विश्वास करने का परिणाम भयानक था। जब वह अपने घर को जाने लगा तो उसे एक शेर ने मार डाला। उससे केवल परमेश्वर द्वारा उसे दिए गए संदेश को मानने की उम्मीद की गई थी न कि किसी दूसरे की बात को, चाहे वह किसी स्वर्गदूत का संदेश भी क्यों न हो।

हर मसीही को केवल उसी को मानने के लिए चौकस रहना आवश्यक है जिसे यीशु ने नये नियम में प्रकट किया है। इसकी शिक्षाओं के उलट जाने का परिणाम उद्धार के बजाय विनाश होगा। मसीही लोगों के लिए जो कुछ यीशु की ओर से प्रेरणा पाए हुए उन लोगों के द्वारा सिखाया गया है जिन्होंने नये नियम को लिखा, मानना आवश्यक है। हर मसीही के लिए ''प्रेरितों से शिक्षा पाने में लौलीन'' रहकर आरम्भिक कलीसिया के नमूने का पालन करना आवश्यक है (प्रेरितों 2:42)।

टिप्पणियां

[1]एच. सी. जी. माउल, *द एपिस्टल टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* द कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स एंड कॉलेजस (कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस,1893; रिप्रिंट 1902), 63. [2]*न्यू बाइबल डिक्शनरी,* 2रा संस्क., संपा. जे. डी. डग्लस, संशो. एन. हिलायर (व्हीटन, इलिनोय: टिंडेल हाउस पब्लिशिंग 1982), 891 में ई. ई. एलिस, ''पॉल।'' [3]*द एंकर बाइबल डिक्शनरी,* संपा. डेविड नोयल फ्रीमैन (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1992), 4:1108 में थामस डब्ल्यू. मार्टिन, ''निकोपोलिस।'' [4]*द न्यू इंटरनैशनल डिक्शनरी ऑफ़ बाइबल,* संपा. मैरिल सी. टैनी, संशो. जे. डी. डग्लस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रीजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1987), 760 में डी. एडमॅण्ड हेबर्ट, ''पॉल।'' [5]हरबर्ट एम. कारसन, *द एपिस्टल्स ऑफ़ पॉल टू द कोलोसियंस एंड फिलेमोन: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 26. [6]*न्यू बाइबल डिक्शनरी,* 2रा संस्क., संपा. जे. डी. डग्लस, संशो. एन. हिलेयर (व्हीटन, इलिनोय: टिंडेल हाउस पब्लिशिंग 1982), 1201 में डोनल्ड गुथरी, ''तिमोथी।'' [7]डोनल्ड स्टम्पस, संपा., *द फुल लाइफ स्टडी बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग कं., 1992), 1677. [8]रॉबर्ट जी. ब्रेचर एंड यूजीन ए. निदा, *ए ट्रांसलेटर हैंडबुक ऑन पॉल 'स लैटर्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* हैल्प फ़ॉर ट्रांसलेशन (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज, 1977), 4. [9]फ्रैडरिक डेल ब्रुनर, *थियोलॉजी ऑफ़ द होली स्प्रिट: द पेंटिकॉस्टल एक्सपीरियंस एंड द न्यू टैस्टामेंट विटनेस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं.,1970; रिप्रिंट 1986), 257-58. [10]रोमियों 12:5; 16:3, 7, 9, 10; 1 कुरिन्थियों 3:1; 4:10; 2 कुरिन्थियों 1:21; गलातियों 1:22; 3:28; इफिसियों 1:1, 3, 4; फिलिप्पियों 4:1, 2, 21; 1 थिस्सलुनीकियों 2:14; 3:8.